मैथिली मे पहिल इ-पेपर

समाद

पटना, 7 मार्च, 2008 ▯ सप्ताहिक ▯ अंक-5 ▯ साल-1 ▯ इनटरनेट संस्करण ▯ पेज-6

निहाल भेल मिथिला

लालू तोड़लथि सबहक रिकार्ड, फेर चलत जानकी एक्सप्रेस

मुजफ्फरपुर आ मोकामा बैगन फैक्टरी खुलत

छपरा मे माल डिब्बा मरम्मत इकाई लागत

मधेपुरा मे जमीन अधीग्रहण करत रेलवे

आधुनिक बनत जमालपुर कारखाना

भेटल नव ट्रेन

- जननगर स नयी दिल्लीक लेल गरीब रथ जे दरभंगा, समस्तीपुर, मोकामा आओर पटना हाइत नयी दिल्ली जाइत.
- सहरसा स अमृतसरक लेल जनसाधारण एक्सप्रेस जे हसनपुर होइत सप्ताह मे एक दिन चलत.
- जयनगर स सहरसाक लेल एक बेर फेर चलत जानकी एक्सप्रेस, मुदा एहि बेर इ ट्रेन हसनपुर द के जाइत.
- मुजफ्फरपुर स सुरतक लेल एक्सप्रेस ट्रेन चलत जे आजमगढ होइत जाइत. इ ट्रेन सप्ताह मे एक दिन चलत.
- जोगबनी स दिल्लीक लेल एकटा लिंग एक्सप्रेस. इ ट्रेन सप्ताह मे एक दिन चलत.
- दरभंगा स पुरीक लेल एक्सप्रेस ट्रेन चलत. इ ट्रेन सप्ताह मे एक दिन पटना द के जाइत.

जे भेटल बिहार के

- भागलपुर स रांचीक लेल एकटा एक्सप्रेस ट्रेन जे किउल द के तीन दिन चलत. इ वनाचंलक स्थान पर अछि, जे दू दिन चलैत छल.
- पटना स मालदाक लेल एकटा ट्रेन जे सप्ताह मे तीन दिन भागलपुर द के चलत.
- गया स कामाख्याक लेल एकटा ट्रेन जे सप्ताह मे एक दिन चलत.
- छपरा स मथुराक लेल एक सप्ताहिक ट्रेन.
- गया स चेन्नईक लेल एक सप्ताहिक ट्रेन.
- हाजीपुरस फुलवरिया लेल ट्रेन.

समाजक सब वर्गक लेल बजट मे किछु न किछु देल गेल अछि. इ एकटा ऐतिहासिक बजट अछि

बजट पर ताली बजाने वाले यह ध्यान रखें कि यह यूपीए सरकार का आखरी बजट है.

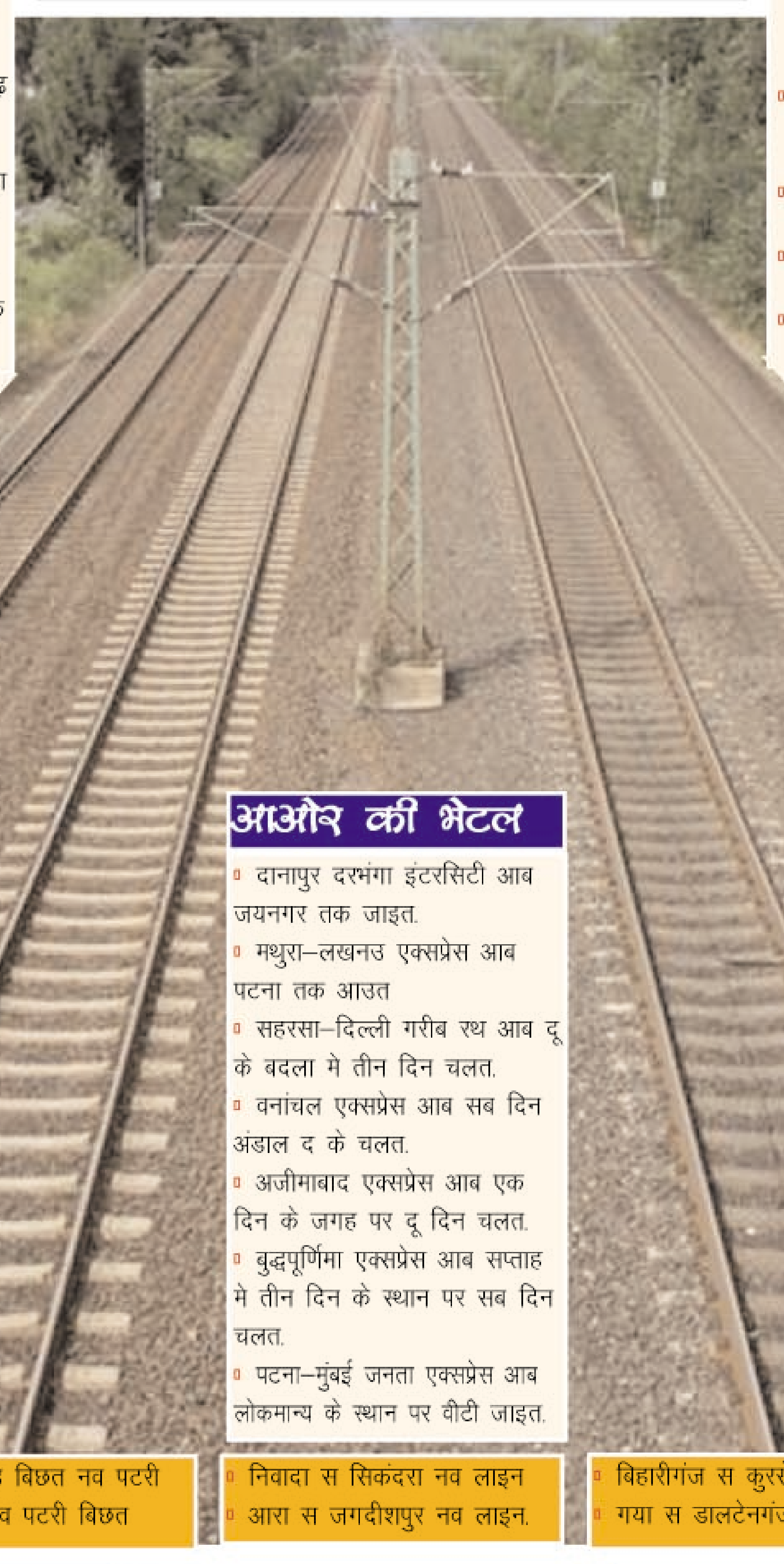

आओर की भेटल

- दानापुर दरभंगा इंटरसिटी आब जयनगर तक जाइत.
- मथुरा–लखनउ एक्सप्रेस आब पटना तक आउत
- सहरसा–दिल्ली गरीब रथ आब दू के बदला मे तीन दिन चलत.
- वनांचल एक्सप्रेस आब सब दिन अंडाल द के चलत.
- अजीमाबाद एक्सप्रेस आब एक दिन के जगह पर दू दिन चलत.
- बुद्धपूर्णिमा एक्सप्रेस आब सप्ताह मे तीन दिन के स्थान पर सब दिन चलत.
- पटना–मुंबई जनता एक्सप्रेस आब लोकमान्य के स्थान पर वीटी जाइत.

- सीतामढी स निर्मली वाया सुरसंड बिछत नव पटरी
- दरभंगा स मुजफ्फरपुरक बीच नव पटरी बिछत
- निवादा स सिकंदरा नव लाइन
- आरा स जगदीशपुर नव लाइन.
- बिहारीगंज स कुरसेला वाया ध्मदाहा बिछत लाइन
- गया स डालटेनगंज बिछत नव पटरी.

रिपोर्ट जे लिखी नहि सकलहु

15 साल बाद अपन गाम लौटल एकटा प्रवासी मैथिल पत्रकारक कथा–रिपोर्ताज

स्थानीय पत्रकार जनैत छलाह जे हम कोनो हाल मे ओ देखबाक प्रयास करब जे देखबा लेल आयल छी, अर्थात बिहारक प्रोग्रेस. जे भेल हुए अथवा नहि भेल हुए. प्रोग्रेस देखबाक हमर जिद हुनकर सपना जेकां अछि. ओ जनैत छथि जे सपना एखनो हुनकर गाम स 15 किमी दूर अछि. 15 किमी शहरक लेल कम दूरी अछि, मुदा गामक लेल इ पूरा एक दिनक सफर अछि.

सांझ छहड़ पर उतरी चुकल छल. दूर–दूर तक पाइन आओर ओकर बीच मे टापूनुमा झोपड़ी मे जरैत लालटेन, सून खेत आओर खेतक बीच स खेतनुमा बाट पर हिचकोला खाइत जाइत हमर रिक्शा. बाटक दूनू कात गाछी आओर गाछी मे लागल आमक गाछक पीयर पात कहि रहल अछि जे किछु दिन पहिने तक इ पाइन मे डूबल छल. कतेक अजीब गप अछि, इ इलाकाक हिस्सा मे बस पाइने अछि. सब ठाम बस पाइने पाइन. घर मे पाइन, खेत मे पाइन, मानू पूरा इलाकाक भाग्य ई पाइन मे डूबी चुकल अछि. व्यवस्थाक निकम्मापन के भाग्यक खाता मे राखि देबाक अपन चालाकी पर हम अपने हैरान छी. कतेक बरख स जारी राहत कार्य सेहो इ पाइन के हटेबाक इच्छा नहि रहैत अछि,उल्टे ओ आब एहि पाइन मे हेलनाइ सीख लेलक अछि.

कतेक सालक बाद हम अपन गाम जा रहल छी, मोन नहि परैत अछि. तखने त बिहारक गामक विकासक सर्वे जिम्मा जखन देल गेल त नहि सोचने रहि जे अपने गाम एतेक बीहड़ लागत. कल्पना स बेसी भयानक तसवीर देखी हम हैरान छी. अपन गाम रहितो एको गोटे चिनहार नहि. परिचित के नाम पर बस राजीव मिश्र, बीए पास पत्रकार. बैस मे हमरे जेकां, लेकिन देखैय मे हमरा स बेसगर. पूरा गाम स परिचित, अधिकारी सन रौब. रिक्शा सीधा हुनक दरबाजा पर जा रूकल. राजीवक घर मे हमर रुकबाक इंतजाम केल गेल छल.

एहि इलाकाक लोक अजीव होइत अछि. भोर अथवा सांझ चाहक गिलास हाथहि मे रहैत छैन. अपनो पीबैत छथि आओर पाहुनो के दैत छथि. पान त प्रतिष्ठा स जुड़ल अछि, कियो देलक त लौटा नहि सकैत छी, खैबाक नहि अछि त हाथ मे रखने रहू, मुदा नहि नहि कहू. कहल जाइत अछि जे जब तक मुंह मे पान नहि जाइत अछि गप आगू नहि बढैत अछि.

गाम अबैत काल हमरा ज्ञान भ गेल छल जे दू दिन मे रिपोर्ट तैयार करब कठिन अछि. बिहारक प्रोग्रेस रिपोर्ट तैयार करब ओनाओ कठिन कार्य मानल जाइत अछि. हमर मुंह स प्रोग्रेस रिपोर्ट सुन राजीवक ठोर पर हंसी आबि गेल. कहलथि– कतेक अजीब गप अछि, सब दिन हम सब रिपोर्ट पठबैत छियैक. हमरा स पहिनो जे पत्रकार छलथि ओ रिपोर्ट पठबैत छलाह. खेत मे फसल बोहनिहार आओर सरकारी कागज पर अंगूठा लगओनिहार एहि इलाकाक लोकक जीवन मे कोनो बदलाव नहि आयल अछि. कोन प्रोग्रेस? केहन प्रोग्रस?

हम हुनका बुझाबह चाहलहु जे दू साल भ गेल नवका सरकार के, किछु त बदलल होयत. कोनो योजना त जमीन पर उतरल होयत. अनहार के कतहु त रोशनी चीरबाक प्रयास करैत होयत. राजीव जनैत छथि जे हम कोनो हाल मे ओ देखबाक प्रयास करब जे देखबा लेल आयल छी, अर्थात प्रोग्रेस. जे भेल हुए अथवा नहि भेल हुए. प्रोग्रेस देखबाक हमर जिद राजीवक सपना जेकां छैन. राजीव जनैत छथि जे सपना एखनो हुनक गाम स 15 किमी दूर छैक. 15 किमी शहरक लेल कम दूरी होइत अछि, मुदा गामक लेल इ पूरा एक दिनक यात्रा अछि. एहन नहि अछि जे एहि गामक सड़कक लेल टाका नहि भेटल अछि. कई बेर एकर मरम्मत कैल गेल अछि. कहल जाइत अछि जे बिहार मे सड़को के पैर भ गेल छल ओ शहर जा के ककरो नाम स मकानक रूप धारण करि लैत छल. गाम लेल सरकारी योजना ओहि पोखरीक समान अछि, जाहि मे पाइन नहि कतहु स अबैत अछि आ नहि कतहु जाइत अछि.

दू दशक पूर्व एहि गाम मे बिजलीक लेल पोल गारल गेल छल, आइ धरि ओकरा पर तार नहि खींचल जा सकल. आइ सड़क के चौड़ा करबा लेल ओ पोल सब के हटाउल जा रहल अछि. गामक लोक लेल पहिनो अनहार छल, पोल हटलाक बाद सेहो अनहार नहि बढत. उम्मीद पहिनो छल, उम्मीद एखनो अछि. गामक सीमा पर पुरान पोलक स्थान पर नवका पोल गारल जा रहल अछि. आशा अछि नवका पोल पर तार तानल जाइत. गाम मे बिजली आउत. मुदा बिजली कहिया तक आउत, एहि सवालक उत्तर गामक लोक लग एखनो नहि अछि.

हमरा सबटा गामक लोक एकहि तरहक लगैत छथि. एकहि कद, एकहि रंग, कांध पर गमछा, देह पर धोती, हाथ मे चाह, मुंह मे पान, ठहरल पाइन जेकां गप मे जड़ता, जे नाउम्मीदक कारण गंध करैत अछि. हम एहन गप एहि कारण स करि रहल छी, कियेक त हम शहरी लोकवेद परंपाराक आकाश क नीचा एहि डूबैत खेत के छोड़ि आसानी स विकासक आंकड़ा पर सवार भ के सभ्य संसारक सुरंग मे दाखिल होएबाक इच्छा रखैत छी.

छहड़ पर खैलाइत बच्चा बता रहल छल जे गामक इकलौता स्कूल बंद छैक, अगर खुलल छैक त आइ फेर शिक्षक स्कूल तक नहि पहुंचलाह. छहड़ पर पोलीथीनक झोपड़ी देखि लगैत अछि जेना एहि ठात श्रमक अमूल्यन बाढ पीड़ितक लेल पारंपरिक विवशता नहि, अपितु सुविधाक जंगल मे अपन मचान बचेबाक आदिम उपाय अछि. छहड़ के उंच करब हिनका हिनकर जमीन स बेदखल करब छी. हम अपन धृनित चालाकी पर पुलकित होइत छी. राजीव किछु एहने भाव स हमरा छहड़ उंच भेलाक ब्योरा द रहल छलाह. एहि बीच एकटा बृद्ध हमरा अधिकारी बूझि पैर पर खसि पड़ल. कहय लागल– साहब इहां हमरा लोक के मटिया तेल नहि मिलता है. ओकर मुंह पर मायूसी देख मन बिचलित भ गेल. हम किछु कहि, तहि स पहीने राजीवक उत्तर आबि गेल– हम जाइते कार्रवाई करब, बुझहि तेल भेट गेलहु. गामक इकलौता कंट्रोलक दुकान राजीवक भाइ के नाम छैक. दुकान काफी दिन स बंद छैक, इ सूचना हमरा एकटा युवक देलक. नवका तोलिया लपेटने ओ युवक गामक युवक स अलग छल. दू दिन पहिने ओ मुंबई स आयल छल. प्रचलित पिछड़ेपनक किददंतिक कारण स मुबई मे भेल उपेक्षाक मारि स ओ अछूता नहि रहि सकल. मुंबईक प्रति आतंक ओकर मुंहक लालिमा मे नहि नुका रहल छल. पढैत छी? हम ओकरा स एकटा फजूल सन प्रश्न केलहु. किछु ठहरि के जबाव भेटल, हां, पढाई पूरा भ चुकल अछि, एमबीए पास छी. एहि ठाम कोनो काज कियेक नहि करैत छी. एतबा पूछलाक बाद हमरा अपन मुर्खता पर लाज भ गेल. ओ खीसके कहलक–नौकरी अपन हाथ मे छैक, जतय छैक ओहि ठाम स भागाउल जा रहल छी आ एहि ठाम त नौकरीक 'न' नहि भेटत. मुंबई नहि त कोलकाता, कतहु त जेबाके अछि. एकटा लंबा सांस ल के हम आगू बढि गेलहुं.

छहड़ पर नहाइत एकटा तहिला के देख हमरा दिल्लीक एकटा सामाजिक कार्यकर्ताक भेंट वार्ता स्मरण मे आबि गेल. सांझ के पाइन मे डूबल गाम हुनका कैनवास पर उतरल एकटा बेहतरीन चित्रकता जेकां लगैत रहनि. नंगटे बिहारी, पीयर गाछक डारी आओर डूबल खेत हुनका कोनो कविता लिखबा लेल प्रेरित करैत छल. चारूकात पाइन मे डूबल मकान, हेलैत सामान आओर छहड़क जीदगी, हुनका कोनो सिनेमाक फ्रेम जेका आभास दैत छल. एकटा अशालीन लाज स ओहि दिन हमर मन नुका रहल छल, आइ फेर एक बेर हम लाज स जमीन मे धंसल जा रहल छी. हमर फटेहाली पर हुनका लोकनि के तहिना सौंदर्यक बोध हाइत अछि, जेना हिंदुस्तानिक फटेहाली पर एखनो ब्रिटेनक लोक के होइत अछि. सभ्यताक विकासक लंबा–चौड़ा दावा केनिहार इ समाज समयक सचक संग निर्वस्त्र हमर सामने बैसल छल. ओ समाज इ महिला स बेसी अशालीन आ असभ्य अछि, लेकिन हम एकरा आसानी स परंपरा आओर नियतीक टोकरी मे राखि दैत छी. जखन कि इ एकर नियती नहि थीक, इ एहि समयक सबस पैघ अश्लील दुर्घटना थीक, जेकर चर्च कोनो इतिहासक किताब मे नहि भेटत. किताब मे भेटत कोना? कैनवास पर उभरैत चित्र स बिहारी के तुलना केनिहारो त अधिकतर बिहारी बाबू छथि. ओ आइ इ बिसरी चुकल छथि जे वर्तमान बिहार हुनक सामाजिक मूल्यक निर्वसनरूपी देहक फोटो कापी थीक. फेर सोचलहु हमहु त हुनकरे कतार क हिस्सा छी. ठीक ओहिना जेना बीडीओ साहब, जे आइ–काल्हि समय स कार्यालय आबि रहल छथि. काज सेहो बढि गेलनहि अछि. चीनी मील लेल जमीनक अधीग्रहण भ रहल अछि. सड़क लेल सेहो जमीन लेल गेल अछि, जेकर मुआवजा बांटल जा रहल अछि. रोजगार कानून बनी चुकल अछि, तेकरा लेल जॉब कोर्ड बांटल जा रहल अछि. पटना आ दिल्ली स लक्ष्य पूरा करबाक दबाव एहि बेर बेसी अछि, मुदा साहैब के दरबार मे सबटा काज अपन गति स भ रहल अछि. हुनकर दरबार मे मुखिया सेहो भेट गेलीह. सब गोटे स परिचय भेल. गप आगू बढल. हमरा बैसला पर बीडीओ साहेब सब फरियादी के आश्वासन द के ओहि ठाम स टरका देलथि. मुखिया ललमुनिया देवी के हम रोकी लेलहु. कहल गेल छल जे गाम मे हुनकर काफी धाक छैन. गामक विकास लेल काफी सजग छथि. लोक सब के जॉब कार्ड भेटबा मे भ रहल देरी स ओ काफी चिंतत छथि. कहैत छथि– एतय जमा अधिकतर लोक काज मंगवा लेल आयल अछि. सरकारी कागज पर हिनका सब के काज भेटबाक गारंटी देल गेल अछि.मुदा एहि ठाम त इ सब काजक भीख मांगी रहल छथि. तखनो हिनका सब के न काज भेट रहल अछि आ न जॉब कार्ड. सब दिन भोर के अबैत छथि आओर अगिला दिन भेटबाक आश्वासन लग के सांझखन चल जाइत छथि. ललमुनिया देवी तामस स कांपैत कहैत छथि जे इ कतार सब दिन एहिना भेटत, किछु नहि बदलत. कई बेर त एहन लगैत अछि जेना इ सब एतहि जमा रहैत छथि, दिन–राइत, सरदी–गरमी, साल आओर युग स.

बीडीओ साहब राजीव स गप खतम केलाक उपरांत हमरा दिस घुरलाह. हमर अगला प्रश्न हुनके स छल. बरसात स पहिने सरकारक आला अधिकारी योजनाक समीक्षा करबा लेल आबि रहल छथि. हमर गप संपन्न नहि भेल छल तखने बीडीओ साहेब कहला जे समीक्षा की करताह, समीक्षाक बहाने घुमता–फिरता. सरकारी जहाज, सरकारी गाड़ी, गला मे कैमरा, संग मे पत्नी आओर गाड़ीक पिछला भाग मे राखल समीक्षा संबंधी फाइल. सरकारी खर्च पर केल जा रहल एहन यात्राक आब कोनो आन उद्देश नहि रहि गेल अछि. गामक लेल विदा हेताह,मुदा बोधगया आओर नालंदाक यात्राक उपरांत कनि काल लेल एहि गाम सेहो आबि जेताह, दरअसल इ एक प्रकारक पिकनिक थीक, जेकर सरकारीकरण भ चुकल अछि. एतय आबि के एको गोटे बाढक गप नहि करताह, सब बौद्धिकताक उलटी करताह, संस्कृतिक चिंता करैत किछु चित्रकला किनताह आ चल जेताह. इ कहैत–कहैत बीडीओ साहेबक मुंह लाल भ गेल. अहू त एहि व्यवस्थाक अंग छी, अहू त इ गामक लोक क जीवनस्तरक सुधारक लेल किछु नहि केलहु. गामक विकासक प्रति अहूं त उदासीन छी. हम धीरे स बीडीओ साहेब स इ सवाल केलहु, नहि, इ सच नहि अछि, दरअसल गामक लोक अपन जीवन स्तर में कोनो बदलाव नहि चाहैत छथि. इ लोकनि एहि मे संतुष्ट छथि. कनि अहि सोचू, सरकार हिनका लेल की नहि करि रहल अछि, मुदा इ सब

बाकी पेज तीन पर

> *हमरा स्मरण मे आयल दिल्लीक एकटा सामाजिक कार्यकर्ताक भेंट वार्ता. सांझ के पाइन में डूबल गाम हुनका कैनवास पर उतरल एकटा बेहतरीन चित्रकता जेकां लगैत रहनि. नंगटे बिहारी, पीयर गाछक डारी आओर डूबल खेत हुनका कोनो कविता लिखबा लेल प्रेरित करैत छल. चारूकात पाइन मे डूबल मकान, हेलैत सामान आओर छहड़क जींदगी, हुनका कोनो सिनेमाक फ्रेम जेका आभास दैत छल. एकटा अशालीन लाज स ओहि दिन हमर मन नुका रहल छल, आइ फेर हम लाज स जमीन मे धंसल जा रहल छी. हमर फटेहाली पर हुनका लोकनि के तहिना सौंदर्यक बोध हाइत अछि, जेना हिंदुस्तानिक फटेहाली पर ब्रिटेनक लोक के होइत रहल अछि. सभ्यताक विकासक लंबा–चौड़ा दावा केनिहार इ समाज समयक सचक संग निर्वस्त्र हमर सामने बैसल अछि. ओ समाज हमरा लोकनि स बेसी अशालीन आ असभ्य अछि, लेकिन हम एकरा आसानी स परंपरा आओर नियतीक टोकरी मे राखि दैत छी. जखन कि इ हमर नियती नहि थीक, इ एहि समयक सबस पैघ अश्लील दुर्घटना थीक,*

45 रेल परियोजना पर खर्च होइत 1240 करोड़

23 नव लाइनक निर्माण पर 579 करोड़ टाका क आवंटन

आमान परिवर्तनक सात टा परियोजना लेल भेटल 400 करोड़

11 रेल लाइनक दोहरीकरणक लेल 155 करोड़ आवंटित.

विद्युतिकरणक लेल चयनित रेलखंड पर खर्च होइत 107 करोड़

पटना : रेलमंत्री लालू प्रसाद संसद मे रेल बजट पर भेल चर्चाक उत्तर मे बिहार मे जारी रेल परियोजना पर विस्तार स जानकारी देलथि. संगहि किछु नव परियोजना आओर नव ट्रेन चलेबाक एलान केलथि. श्री प्रसाद बजट मे बिहारक लेल खूब टाका आवंटित केलथि अछि. दू दर्जन स बेसी नव ट्रेन देलाक बावजूद जेना हुनक मन नहि भरि रहल छैन. श्री प्रसाद बिहार लेल एक दर्जन नव लाइन बिछेबाक एलान करलथि अछि, जेकरा लेल बजट मे काफी टाका सेहो राखल गेल अछि. 2008–9 के दौरान बिहार मे कुल 45टा परियोजना पर काज भ रहल अछि, इ परियोजना के पूरा करबा लेल बजट मे कुल 1240 करोड़ टाकाक आवंटन केल गेल अछि. एहि में 23टा नव लाइन क निर्माण पर 579 करोड़ टाका खर्च केल जाइत. आमान परिवर्तन के सात टा परियोजना पर कुल 400 करोड़ टाका खर्च होइत. तहिना 11 टा दोहरीकरण योजना पर 155 करोड़ आओर विद्युतिकरण पर 107 करोड़ टाका खर्च केल जाइत.

नव लाइन

मुजफ्फरपुर–सीतामढी	44 करोड़
देवघर–सुल्तानगंज :	35
मंदारहिल–रामपुरहाट :	30
हथुआ–भटनी :	24 करोड़
राजगीर–तिलैया :	20 करोड़
हाजीपुर–सुगौली :	20 करोड़
छपरा–मुजफ्फरपुर :	20 करोड़
दरभंगा–कुशेश्वरस्थान :	20 करोड़
आरा–सासाराम :	20 करोड़
सकरी–हसनपुर :	पांच करोड़
फतुहा–इस्लामपुर :	पांच करोड़
महाराजगंज–मशरख :	पांच करोड़
छितौनी–टुमकुही :	पांच करोड़
अररिया–ठाकुरगंज :	एक करोड़
मोतिहारी–सीतामढी :	एक करोड़
खगड़िया–कुशेश्वरस्थान :	एक करोड़
बिहटा–औरंगाबाद :	एक करोड़
बरियारपुर–मानपुर :	एक करोड़
सुल्तानगंज–करौरिया :	एक करोड़

विद्युतिकरण

बाराबंकी–गोरखपुर–बरौनी :	100 करोड़
बोकारो–बरसुआ :	सात करोड़

आमान परिवर्तन

कप्तानगंज–थावे–छपरा :	150 करोड़
जयनगर–दरभंगा–नरकटियागंज :	90 करोड़
सकरी–निर्मली–फारबिसगंज :	50 करोड़
जोगबनी–कटिहार–राधिकापुर :	50 करोड़
मानसी– सहरसा :	45 करोड़
अलुआबाड़ी–सिलिगुड़ी :	10 करोड़
समस्तीपुर–खगड़िया :	पांच करोड़
मानसी–खगड़िया :	पांच करोड़

दोहरीकरण

भटनी–जीरादई :	32 करोड़
खगड़िया–बेगूसराय :	24 करोड़
जहानाबाद–बेला व बेला–चाकंद :	15–15 करोड़
जहानाबाद–तरेगना व हाजीपुर–सोनपुर :	10–10करोड़
बिहपुर–कुरसेला व एकमा–जीरादई :	10–10 करोड़
कजरा–किउल :	छह करोड़
तिलरथ–बेगूसराय :	चारि करोड़

किछु ट्रेन आओर भेटल

- छपरा–गोरखपुर इंटर सिटी –छह दिन
- धनबाद–पटना इंटर सिटी– छह दिन
- भागलपुर–बेंगलुरु एक्स – एक दिन
- बापूधाम–पोरबंदर एक्स– आब दू दिन
- आजादपुर–सहरसा एक्स– आब दू दिन
- राजेंद्रनगर–जम्मूतवी एक्स – आब दू दिन
- टाटानगर– कटिहार लिंक एक्सप्रेस

एकटा रेलवे स्टेशन जतय पुरुष कर्मचारि नहि छथि

हाजीपुर : भारत मे एकटा एहनो रेलवे स्टेशन अछि, जाहि ठाम एकोटा पुरुष कर्मचारी नहि अछि. इ स्टेशन बिहार मे अछि आ पूर्व–मध्य रेलवेक मुख्यालय अछि. महिला सशक्ति दिवस के मौका पर हाजीपुर जकशन पर टिकट काउंटर स ल के सिगनल स्वीच तक सबटा काज महिलाक जिम्मा द देल गेल अछि. एहि ठाम किछु काज त एहन अछि जे एहि स पहिने पूर्ण रूप स पुरुषक जिम्मा मे रहैत आयल अछि आ महिला इ काज कहियो नहि केलथि. एहन काज लेल महिलाक चुनाव करबा लेल रेलवे प्रशासन के काफी मुश्किल भेल. एकरा बावजूद चयनित महिला ओ काज के नीक जेका निभा रहल छथि.

वित्तरहित कॉलेजक दिन फिरल

801 कॉलेजक लेल 390 करोड़ भेटत, तीन माह लेल 54 करोड़ आवंटित

पटना : मानव संसाधन विभाग वित्त रहित शिक्षा नीति के खतम करबा लेल प्रयास तेज करि देलक अछि. ओना सरकार इ साफ करि देलक जे वित्तरहित शिक्षा नीति के तहत स्थापित कॉलेजक अधिग्रहण नहि केल जाइत, मुदा एहन कॉलेजक लेल सरकार अनुदानक व्यवस्था करि रहल अछि. सरकार फिलहाल 801 टा कॉलेजक लेल कुल 390 करोड़ टाका अनुदानक रूप मे देबाक निर्णय लेलक अछि. पहिल तीन माह लेल 54 करोड़ टाकाक आवंटन सेहो करि देल गेल अछि. ओना सरकार लेल इ टाकाक व्यवस्था करब आसान नहि अछि. वित्तमंत्री सुशील मोदी एकरा एकटा चुनौती मानैत दथि. श्री मोदी कहैत छथि जे एतेक टाकाक व्यवस्था करब आसान नहि, एकरा बावजूद हम अपन वादा के पूरा करब आओर एहन कॉलेज लेल राशि उपलब्ध कराउल जाइत.

शिक्षामंत्री वृशिण पटेल एहि संबंध मे कहैत छथि जे कॉलेजक सूची तैयार भ चुकल अछि. एकर चयनक आधार 1989 मे स्थापित कॉलेज के बनाउल गेल अछि. ओना 89 मे मंत्रिपरिष एहि संबंध में फैसला लेने अछि. सामान्य बैठक लेल तिथि तय छल मुदा आइ धरि मेल नहि. नीतीश सरकार एहि मुद्दा पर शुरू स गंभीर छल आ एकटा ठोस नीति बना के एकरा लागू करि रहल अछि. श्री पटेलक अनुसार कुल चयनित 801 कॉलेज मे 325 डीग्री, 326 इंटर आओर 150 घाटा अनुदान प्राप्त कॉलेज अछि. घाटा अनुदान कोटि में महिला कॉलेज के प्राथमिकता देल जा रहल अछि. एकरा लेल किछु धारा के शिथिल सेहो केल जा रहल अछि. एकरा संगहि जहि अनुमंडल मे एकहि टा कॉलेज अछि आ ओ भूमि आ भवन रखने अछि, तकरा अनुदान देबा मे प्राथमिकता भेटत. श्री पटेलक अनुसार 150 कॉलेज मे प्रत्येक के 1.17 करोड़ टाका देल जाइत. तहिना 325 डिग्री व 326 इंटर कॉलेज पर सालाना 216 करोड़ खर्च होइत

पेज दू के बाकी अंश

ओतहि के ओतहि छथि. एको डेग आगू नहि बढि सकलथि अछि. चाहक ग्लास रखैत बीडीओ साहेब कहलथि.

एतबा काल मे हमरा ज्ञान भ चुकल छल जे गामक लोक की चाहैत छल. आओर ओ अपन जीवन स कतेक संतुष्ट अछि. हम सोचलहु गाम क स्तर पर सरकार यानी बीडीओ. हम हुनक प्रयास देखि रहल छी आओर किछु–किछु बुझबा मे सेहो आबि रहल अछि. एहन मे हुनका कोनो उत्तर देला स कोनो फायदा नहि अछि. दरअसल गामक लोक एखनो अपन स्थितिक लेल जिम्मेदार लोक के चिनहबा मे असमर्थ छथि, ओ अपन स्थिति के एखनो भाग्यक उपर छोड़ी दैत छथि. आ भाग्य पलायनक रूप मे हुनकर जिनगी मे अबैत अछि. एतेक पलायन केवल बिहारी हेबाक कारण स नहि, बल्कि काज नहि भेटला स होइत अछि. बीडीओ साहेब क दरबार मे अधिकतर लोक काज मंगबा लेल आयल छथि. एहि मे किछु असम स त किछु मुबई स लौटल बिहारी छथि. हिनका सब के तुरंत काज उपलब्ध करेबाक लेल सरकार बीडीओ के निर्देश देने अछि. हिनका लोकनि के काज त दूर एखन धरि जॉब कार्ड तक नहि बनि सकल अछि. कर्मचारीक कहब छैन जे फारम खतम भ गेल अछि. जिला मुख्यालय स फारम आउत त कार्ड बनत. मुखिया लालमुनी देवी कर्मचारीक फरमान स तमसायल छथि. कहैत छथि– जिला मुख्यालय स मुफत मे फारम पठाउल जाइत अछि, मुदा गामक लोक लेल फारम दुर्लभ अछि. एतबा मे भीड़ स आवाज अबैत अछि–बीडीओ साहेबक बेटा फारम स हवाई जहाज बना के उड़ा रहल अछि. मुखिया जी कहैत छथि जे हो–हल्ला भेला पर पांच–छह टा फारम उपलब्ध भइये गेल त ओकरा जमा करबा मे पांच–दस टाकाक खर्चा देखाउल जाइत.

शातिर शहरीनप, अनुभवी दफ्तरी काइयापन कहियो गामक लोक के इ बुझबा मे नहि आबैय देलक जे जॉब कोर्ड हुनक केवल अधिकार नहि थीक, बल्कि सरकार ओकरा बांटबा लेल लक्ष्य तक निर्धारित करि चुकल अछि. सच पूछू त गामक लोक स बेसी सरकारी बाबू के जॉब कार्ड बंटबाक जल्दी हेबाक चाही.

एतबा मे हलचल मची गेल. पता चलल जे फारम आबि गेल. मुखिया ललमुनिया देबी लोक के फारम भरबा मे मदद करबा लेल चल गेलीह. राजीव आ हम सेहो बीडीओ साहेब स आज्ञा ल के विदा भ गेलहुं.

राजीब कहलथि जे असम स लौटल जन कहैत छथि जे 100टाकाक मजदूरी मे सालक साल ओ. करा सब स काज लेल जाइत छल. हुनक कहब छैन जे गाम मे 50 टाकाक काज भेटला पर ओ बाहर नहि जेताह.

हम सोचय लगलहु जे शहर मे इ बिहारी मजदूरक श्रमशक्तिक खिस्सा सुनाउल जाइत अछि. पैघ–पैघ अर्थशास्त्री हिनकर बेटीक विवाह मे खर्चक मजबूरी के हिनक घावक शक्तिक रूप मे परिभाषित करि रहल छथि. हम खुश होइत छी जे कियो हमर विकासक प्रसंशा करि रहल अछि. दरअसल श्रमक इ रूप पारंपरिक विवशता नहि, अपन वजूद बचेबाक विवशता थीक. एहि विवशता के कम करबा लेल चार लेनक सड़क युद्धस्तर पर बनि रहल अछि. पैघ–पैघ मशीन दिन–राति काज करि रहल अछि. एहि सड़कक एकटा छोड़ गुजरात जाइत अछि त दोसर छोड़ असम स अबैत अछि. इ सड़क तेजी स गाम दिस आबि रहल अछि, मुदा गाम स एखनो ओ बस जा रहल अछि जाहि पर मुबई स भगाउल ओ युवक अछि, जे तोलिया लपेटने छहड़ पर भेटल छल. काजक लेल ओ पलायन करि रहल अछि. ओकरा आइ फेर जॉब कार्डक लेल फारम नहि भेटल. बस पर ओकरा सन अनेक लोक अछि, जे काज नहि भेटला पर गाम छोड़ि रहल अछि. सड़कक बगल पर राखल मशीन देखी बस पर एकटा यात्री दोसर के कहैत अछि– एहि बेर सड़क गाम तक पहुंच जाइत. ओकर उम्मीद छैक जे विकास ओकर घर तक पहुंचत. जेबाक दुख लौटबाक उम्मीद पर भारी परि रहल छल. मुदा असली चिंता त ओहि ठाम अछि, जहि ठाम स हम लौट एलहु अछि. पूरा समाज फारम देखि के अगुठा देखा रहल छल, जखन कि सुशासन एखन अपने अंगुठा चूसि रहल अछि.

राजीव हमर कांध पर हाथ रखैत कहला – टूटल सड़क पर मजदूर स भरल बस जल्द नवका सड़क स लौटत. इ उम्मीद आब विश्वास मे बदली रहल अछि. हम आ राजीव धीरे–धीरे गाम दिस लौटय लगलहु. राजीवक आग्रह पर रास्ता मे एकटा पानक दुकान पर ठहरि गेलहु. पान खेलाक बाद दूनू गोटे थाकि चुकल छैलहु. एहि कारण स एकटा रिक्शा पकड़ी लेलहुं. रास्ता मे स्कूल स लौटैत बच्चा भेटल. पूछला पर पता चलल जे स्कूल मे नव शिक्षक बहाल भेल अछि. स्कूल आब रोज खुलत, सांझ तक चलत. लड़की लेल सरकार साइकिल बांटलक अछि. आब गाम मे छौड़ा स बेसी छौड़ी लग साइकिल छैक. रिक्शा पर बैसल साइकिलक दूर–दूर तक कतार देखैत अचानक आंखि एक ठाम स्थिर भ गेल. बीडीओ साहेब लग ओहिना दरबार लागल छल. साहेब नदारद छलाह. सोचलहु आब कोनो कला प्रेमी गाम दिस अउताह त कहबैन जे इ पाषाण प्रतिमा के देखू, जे कई सदी स एहिना बैसल अछि. एकरा एहि ठाम स कियो नहि हटा सकल. एकटा गेलाह त दोसर हुनकर स्थान पर बैस गेल. दरबार बदस्तूर जमल अछि. हमर रिक्शा राजीवक दलान पर पहुंच चुकल छल. हुनक पत्नी आ बेटी अखबार पढी रहल छलीह. समाचार छपल छल मारीशस के प्रधानमंत्री नवीन. चंद रामगुलाम अपन मूल गाम देखी कानय लगलाह, हमरो आंखि डबडबा गेल.

> *रास्ता मे स्कूल स लौटैत बच्चा भेटल. पूछला पर पता चलल जे स्कूल मे नव शिक्षक बहाल भेल अछि. स्कूल आब रोज खुलत,सांझ तक पढ़ाई होयत. लड़की लेल सरकार साइकिल बांटलक अछि. आब गाम मे छौड़ा स बेसी छौड़ी लग साइकिल छैक.*

> *सड़क युद्धस्तर पर बनि रहल अछि. पैघ–पैघ मशीन दिन–राति काज करि रहल अछि. एहि सड़कक एकटा छोड़ गुजरात जाइत अछि त दोसर छोड़ असम स अबैत अछि. इ सड़क तेजी स गाम दिस आबि रहल अछि, मुदा गाम स एखनो ओ बस जा रहल अछि जाहि पर मुबई स भगाउल ओ युवक अछि, जे तोलिया लपेटने छहड़ पर भेटल छल. काजक लेल ओ पलायन करि रहल अछि. ओकरा आइ फेर जॉब कार्डक लेल फारम नहि भेटल. बस पर ओकरा सन अनेक लोक अछि, जे काज नहि भेटला पर गाम छोड़ि रहल अछि.*

> *सोचलहु आब कोनो कला प्रेमी गाम दिस अउताह त कहबैन जे इ पाषाण प्रतिमा के देखू, जे कई सदी स एहिना बैसल अछि. एकरा एहि ठाम स कियो नहि हटा सकल. एकटा गेलाह त दोसर हुनकर स्थान पर बैस गेल. दरबार बदस्तूर जमल अछि.*

> *हम सोचय लगलहु जे शहर मे इ बिहारी मजदूरक श्रमशक्तिक खिस्सा सुनाउल जाइत अछि. पैघ–पैघ अर्थशास्त्री हिनकर बेटीक विवाह मे खर्चक मजबूरी के हिनक घावक शक्तिक रूप मे परिभाषित करि रहल छथि. हम खुश होइत छी जे कियो हमर विकासक प्रसंशा करि रहल अछि. दरअसल श्रमक इ रूप पारंपरिक विवशता नहि, अपन वजूद बचेबाक विवशता थीक.*